P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत में उच्च शिक्षा : दशा और दिशा

लक्ष्मीना भारती
सह प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर रा0म0 महाविद्यालय, फतेहपुर, भारत

सारांश

प्राचीन काल में शिक्षा के क्षेत्र में भारत को विश्व गुरू का दर्जा प्राप्त था, जहाँ गुरूकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध संघारामों के माध्यम से छात्रों को शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन तथा मध्यकाल के कुछ उच्च शिक्षा संस्थान अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध थे, जिनमें अध्ययन हेतु दूर–दूर से छात्र भारत आया करते थे। परन्तु दुर्भाग्य से कालान्तर में यह गौरवमयी परम्परा नष्ट हो गयी और पाश्चात्य देश आधुनिक विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में अग्रणी होने के साथ–साथ उच्च शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में भी अग्रणी होते चले गये। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद उच्च शिक्षा का काफी तेजी से विस्तार हुआ। किन्तु बदलते परिवेश में आये दिन नये–नये विश्वविद्यालयों का उद्घाटन तो हो रहा है किन्तु गुणवत्ता में कोई सुधार नहीं किया जा रहा है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन एवं समाज का गुणात्मक विकास करना है पर यह विडम्बना है कि मूल्य खोते जा रहे हैं। अतः आज आवश्यकता है कि उच्च शिक्षा की कार्य प्रणाली, कार्य संस्कृति को पूरी तरह पारदर्शी एवं मूल्य आधारित बनाया जाए जिससे हम अपने अतीत की गौरवमयी परम्परा 'विश्व गुरू' की पहचान को पुनः स्थापित कर सकें।

मुख्य शब्द : विश्वगुरू, गौरवमयी परम्परा, पाश्चात्य देश, गुणवत्ता, मानवीय मूल्य।

प्रस्तावना

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर प्राचीन भारत का नाम विश्व गुरू के रूप में अंकित है। प्राचीनकाल में गुरुकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध संघारामों में छात्र कुछ विषयों का गहन अध्ययन करके उच्च शिक्षा प्राप्त करते थे। प्राचीन तथा मध्यकाल के कुछ शिक्षा संस्थान अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध थे, जिनमें अध्ययन हेतु दूर–दूर से छात्र आया करते थे। नालन्दा विश्वविद्यालय में चीन, कोरिया, जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया आदि देशों से अध्ययन के लिए छात्रों के आने के स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं। परन्तु दुर्भाग्य से कालान्तर में यह परम्परा नष्ट हो गई तथा आधुनिक विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में विकास करने के साथ–साथ पाश्चात्य देश उच्च शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में भी अग्रणी हो गये। जिसके परिणाम स्वरूप भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की आवश्यकता महसूस की गई। सन् 1854 में वुड के घोषणा पत्र में भारत में विश्वविद्यालय खोलने की सिफारिश की गई थी जिसके परिणामस्वरूप सन् 1857 में कलकत्ता, बम्बई व मद्रास में तीन विश्वविद्यालय खोले गये थे और स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारत में कुल 20 कलकत्ता, बम्बई व मद्रास (1857), इलाहाबाद (1887), मैसूर (1717), पटना (1917), उस्मानिया (1946), अलीगढ़ (1921), लखनऊ (1921), दिल्ली (1922), सागर (1946), राजस्थान (1942) तथा चण्डीगढ़ (1947) विश्वविद्यालय मौजूद थे। स्वतंत्रता के उपरांत उच्च शिक्षा का काफी तेजी से विस्तार हुआ। तब से लेकर आज तक अनेक विश्वविद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय स्थापित किये जा चुके हैं। एच0 हेदरिंगटन ने अपनी पुस्तक ''दि सोशल फंकशन आफ दि यूनिवर्सिटी'' में विश्वविद्यालय का कार्य, ''ज्ञान के उस व्यापक रूप का अन्वेषण करना बताया है जो मानव संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रो में विकास तथा उन्नति में सहायक हो सके।''

अध्ययन की आवश्यकता

किसी भी समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा ही वह नींव है जिस पर किसी भी देश एवं नागरिक का विकास सम्भव है। आज भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों की बाढ़ सी आ गयी है किन्तु शिक्षा की गुणवत्ता में तेजी से गिरावट आयी है जिससे भारत जो कभी विश्व गुरू की उपाधि से नवाजा जाता था, आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पाश्चात्य देशों की बराबरी भी नही कर सकता। यह विडम्बना ही है कि विश्व गुरू की महिमा पाने वाला यह देश उच्च शिक्षा में व्याप्त तमाम समस्याओं से जूझ रहा है और जिसका निदान यदि नही ढूंढा गया तो विकास की दौड़ में हम बहुत पीछे रह

जायेगें। अतः इस हेतु भारतीय उच्च शिक्षा की दशा एवं दिशा का अध्ययन अति आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा में व्याप्त तमाम विसंगतियों एवं समस्याओं को दूर कर भारतीय युवा वर्ग को ऐसी शिक्षा व्यवस्था प्रदान करनी है जो गुणवत्ता के साथ–साथ मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत हो जिससे हम अपनी भारतीय परम्परा को पुनः जीवित करते हुए विश्व गुरू का दर्जा दिला सकें।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च शिक्षा का ऐतिहासिक, वर्णात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है तथा समस्या के विवेचनोपरान्त उसका विश्लेषण एवं समीक्षा करते हुए निष्कर्ष दिया गया है।

विषय प्रवेश

बदलते समय के साथ आज हम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति और विकास का विश्व बाजारवादी मॉडल लेकर आगे बढ़ रहे हैं। विश्वविद्यालय वह दर्पण है, जिसमें समय और समाज की तस्वीर दिखाई देती है, पर यह पुरानी बात है, नई बात यह है कि अब विश्वविद्यालय दीमक की तरह समाज के संसाधनों को चाटकर धूल कर रहे हैं। आये दिन नये–नये विश्वविद्यालय का उद्घाटन हो रहा है जिसमें हमारे युवा छात्र उत्सव व पिकनिक का आनंद लेते हैं और अपने जीवन के कीमती समय को बर्बाद कर अपने जीवन को बोझिल बना देते हैं। मुक्त विश्वविद्यालय में मुक्त शिक्षा के नाम पर अंधाधुंध डिग्रियाँ बाँटी जा रही हैं। मुक्त विश्वविद्यालय का पूरा ढाँचा ही विदेशी है, पूरा मॉडल उसी ताम–झाम का हाथीवाद है जो खाता है, पैदा कुछ नहीं करता।

आज महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय की संख्या तो बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है, पर छात्रों को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित मूल्य युक्त शिक्षा नहीं मिल पा रही है जिससे उच्च शिक्षा का लक्ष्य कहीं खो सा गया है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन एवं समाज का गुणात्मक विकास करना है। आज शिक्षितों की भीड़ बढ़ती जा रही है, पर गुणात्मक शिक्षा, मानवीय मूल्य खोते जा रहे हैं।

शिक्षा का उद्देश्य देश के विकास के लिए मानवीय संसाधनों को विकसित करना होता है, जिसे शिक्षा द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। मानवीय संसाधनो के विकास में उच्च शिक्षा की बहुत ही अहम् भूमिका होती है। यह सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम है। किन्तु बड़े दुर्भाग्य की बात है कि वैश्वीकरण के इस युग में भारत जैसे विकासशील व मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले देश में अध्यापक को एक व्यावसायिक व्यक्ति माना जाता है। वर्तमान समय में इन्हें हीन भावना की दृष्टि से देखा जाता है। इसके लिए हमारी सरकार, शिक्षक व छात्र तीनों ही जिम्मेवार हैं। आज शिक्षक अपने उत्तरदायित्व, कर्तव्यबोध, चरित्र, शिक्षण कार्य में जागरूकता, नवीन शिक्षण तकनीक व नवउन्मेश, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, विषय व लक्ष्य, अनुशासन, नैतिक, ओरियन्टेशन व रिफ्रेशर कोर्स, गुणवत्तायुक्त शोध आदि को भूलता जा रहा है। यद्यपि उच्च शिक्षा को अधिक प्रासंगिक बनाने हेतु समय–समय पर समितियों, आयोगों, संशोधनों, विषय सूची में समयानुकूल संगठन की अवस्था की व्यवस्था की जाती रही है।

सर्वप्रथम उच्च शिक्षा को अधिक प्रासंगिक व गुणवत्तायुक्त बनाने के लिए 1956 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की गयी। विश्वविद्यालय शिक्षा संवर्द्धन व समन्वय, शिक्षण व अनुसंधान का मानक निर्धारण विश्वविद्यालय व कॉलेजों के रख–रखाव व विकास हेतु अनुदान, शिक्षा में सुधार के उपाय आदि सभी इसके अन्तर्गत आते हैं। 1942 में विज्ञान विषयों में गुणवत्ता लाने हेतु वैज्ञानिक एवं औद्योगिक परिषद (C.S.I.R.) की स्थापना नई दिल्ली में की गई। 1965 में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में, 1972 में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली में, 1973 में NCRTE, 1981 में भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद (IPRC), 1985 में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) 1985 में ही मानव संसाधन विकास मुख्यालय शिक्षा, संस्कृति, कला, यूथ अफेयर्स व सपोर्टस महिला एवं बाल कल्याण स्थापित किया गया। इन विभिन्न एजेन्सियों द्वारा समय–समय पर विभिन्न कार्यशालाएँ, सेमिनार, ओरियन्टेशन व रिफ्रेशर कोर्स, तकनीकी व विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम, गोष्ठी, व्यावसायिक प्रशिक्षण शोध व सम्मेलन, पत्राचार पाठ्यक्रम, अंशकालिक प्रशिक्षण आदि आयोजित किये जाते हैं, जिससे उच्च शिक्षा में गुणवत्ता लाया जा सके। साथ ही उच्च शिक्षा की कार्य प्रणाली, कार्यसंस्कृति को पूरी तरह पारदर्शी एवं मूल्य आधारित बनाना होगा। क्योंकि संसार रूपी समुद्र में जीवन के सुचारू संचालन तथा मंगलमय जीवन के लिए शिक्षा पतवार है। आज परम्परागत शिक्षा की बजाय व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया जाना चाहिए जिससे सामाजिक, आर्थिक एवं साँस्कृतिक विकास करके युवकों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता की जा सके। सुयोग्य प्राध्यापकों के प्रतिभा पलायन पर रोक, ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा द्वारा शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं का समाधान व निराकरण किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भारत में प्राचीन काल से ही भौतिक विकास के साथ–साथ मानवीय मूल्यों को जगह दी गयी है क्योंकि दोनों के सांमजस्य से ही हम चिर स्थायी विकास कर सकते हैं। भारत में प्राचीन काल से ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानवीय मूल्यों एवं गुणों को महत्व दिया गया है। यद्यपि आज इसमें तेजी से गिरावट भी आयी है जिसका प्रभाव उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी देखने को मिलता है किन्तु इस गिरावट से उबरने के लिए हमारी सरकार ने निरन्तर प्रयास भी किया है और आज भी इस दिशा में निरन्तर प्रयास जारी है जिससे धीरे–धीरे ही सही पर हमारी उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार आ रहा है। यद्यपि इसमें आशाजनक परिणाम अभी नही मिल पा रहा है किन्तु आने वाले समय में हमारी उच्च शिक्षा निश्चित ही पाश्चात्य देशों की शिक्षा से बेहतर परिणाम दे पायेगी, इसी उम्मीद के साथ अपनी लेखनी को विराम देती हूँ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

डॉ0 एस0पी0 गुप्ता–आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें, 2007, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

डॉ0 ईश्वर दयाल गुप्त–आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्या चिन्तन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्ढीगढ़, 1991

नत्थूलाल गुप्त–मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

डॉ0 हंसराज पाल–उच्च शिक्षा में अध्यापन एवं प्रशिक्षण की प्रविधियाँ, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2000

हुमायूँ कबीर (अनुवाद श्री कृष्णचन्द) : भारतीय शिक्षा दर्शन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1962

डॉ0 कृष्ण कुमार–प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 1999

P.D. Shukla – The New Education Policy, Delhi : Sterling Publishers Private Ltd. 1988

Higher Education in India : Issues, Cancers and new Direction, Published on Golden Jubilee Year, 2003 of University Grant Commission.